

भूमिस्पर्श

बुद्ध नाम के एक व्यक्ति तथा उनके उपदेशों का अनुकरण करने वाले सभी साथी अनुयायियों एवं प्रशंसकों का स्वागत है तथा उनका भी स्वागत है जो उनके बारे में मात्र कुछ जिज्ञासा रखते हैं।

बुद्ध और उनके उपदेशों का स्मरण करने के लिए समर्पित इस साइबर-सभा में स्वागत है।

✱

हम मानव विभिन्नता का एक मिश्रण हैं। हमें बुद्धिमान माना जाता है और हमने बहुत कुछ हासिल किया है- कभी-कभी बहुत अधिक! लेकिन हमने अपने प्राकृतिक वास और अपने बच्चों की विरासत को भी नष्ट किया है और ऐसा करना हमने जारी रखा है।

विभिन्नता का यह मिश्रण तथा हमारा असत्यवत मानव स्वभाव बहुधा दृष्टिगोचर होता प्रतीत होता है क्योंकि हम इन दोनों के बीच भ्रमित हो जाते हैं कि हमें सुख देने योग्य क्या है और वास्तव में हमारे लिए लाभकारी क्या है।

यद्यपि दयालु व अच्छे विचार कभी-कभी इतने क्षणिक प्रतीत होते हैं जैसे अंधेरे में बिजली का कौंधना, ऐसा हम सभी के साथ होता है। जब भी हम किसी का गर्मजोशी से अभिवादन करते हैं, उनसे हाथ मिलाते हैं, उन्हें भोजन कराते हैं तथा मेज पर उनका स्वागत करते हैं या यहां तक कि किसी पर केवल मुस्कुराते हैं तो हम अपनी सहज देखभाल, उदार व प्यार करने वाले स्वभाव की अभिव्यक्ति करते हैं।

हां, ऐसे सामान्य कार्य कभी-कभी संकीर्ण, अदूरदर्शी और विशिष्ट भी हो सकते हैं - परिवार, दोस्त, साथी देशवासियों या एक ही रंग के लोगों तक ही सीमित हो सकते हैं। लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं कि अच्छाई तो हम में है। और हमारे पास इसे और अधिक विकसित करने की पूरी क्षमता है - बहुत अधिक - और अधिक खुलने की, दूरदर्शी और समावेशी होने की, यदि किसी अन्य के लिए नहीं तो कम से कम हमारे अपने भले के लिए तो है।

मीडिया का बुरी खबर के प्रति जुनून के बावजूद, ऐसा नहीं है कि विश्व केवल आक्रामक, स्वार्थी, अत्याचारी, मूर्ख और विचलित है। वास्तव में, हमारे पास सौम्य, दयालु, करुणामय, विचारशील और समर्पित कार्यों की कहीं अधिक बहुतायत है।

मुझे यकीन है कि ठीक इसी क्षण, यदि दसियों लाख नहीं तो लाखों लोग ऐसे हैं जो अपने हृदय की दयालुता से कुछ अच्छा कर रहे हैं- जैसे जीवन बचाना, किसी अजनबी को खाना खिलाना,

विकलांग या बुजुर्ग व्यक्ति को बस में सीट देना, एक विलुप्त होने वाली प्रजाति को बचाने के प्रयास में योगदान के लिए अपनी पसंदीदा कैपुचिनो कॉफी को त्यागना अदि.....

यहां तक कि किसी अन्य व्यक्ति की पीड़ा के प्रति सहानुभूति की क्षणिक सांसारिक भावना भी बड़ी बात प्रतीत नहीं हो सकती है। लेकिन हमें यह एहसास नहीं है कि यह वही भावना है जो वास्तव में दुनिया चलाती है। उस बुनियादी दया और सहानुभूति के बिना जो हमारे स्वभाव के मूल में है, हम एक साथ रह भी नहीं सकते थे।

मुझे पता है कि ऐसे बहुत से लोग हैं, जिनमें कई राजनेता और व्यापारी भी शामिल हैं, जो इस प्रकार का आचरण करते हैं जैसे कि उन्हें पृथ्वी और उसके निवासियों की भलाई के बारे में कोई परवाह नहीं है। लेकिन क्या हम उन सभी नर्सों और डॉक्टरों के बारे में यह भी नहीं जानते जो पिछले कई महीनों से साहसपूर्वक प्रत्येक दिन अपना जीवन कर्तव्य करते हुए लगा रहे हैं?

अच्छाई विद्यमान है। दयालुता विद्यमान है। और अच्छा और दयालु होना कमजोरी नहीं है। जैसा कि हमने देखा है, विपरीत ही सत्य है!

बुद्ध ने सिखाया और सिद्ध किया, कि कोई फर्क नहीं पड़ता कि वर्तमान में हम कैसा अनुभव और कर्म करते हैं, भलाई और दयालुता सीखी जा सकती है और आदत भी बन सकती है। इस पृथ्वी ग्रह पर, अतीत और वर्तमान दोनों में, भलाई और दयालुता के बहुत सारे महान आदर्श हुए हैं, और मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है भविष्य में भी होना जारी रहेगा।

क्योंकि हम सामाजिक प्राणी हैं, हम उन अतीत और वर्तमान तथा दूसरों के द्वारा किये गए

कार्यों से गहराई से प्रभावित हैं। हम उन अनुभवों पर पकड़ बनाये रखते हैं और जो हमारे मूल्यों और विश्वासों को बनाते हैं। यह एक अच्छी खबर है, क्योंकि इसका तात्पर्य यह है कि हम अभी जो करते हैं उससे हम भविष्य को प्रभावित कर सकते हैं।



और ठीक यह वही है जो हम यहां करने की कोशिश कर रहे हैं - स्वयं को कुछ याद दिलाने की जो वास्तव में विश्व की दिशा बदल सकता है।



हां, वैज्ञानिक, चिकित्सा शोधकर्ता, व्यापारी लोग, राजनीतिक नेता और सामाजिक कार्यकर्ता हमारी समस्याओं का समाधान खोजते रहेंगे। हमें अवश्य यह कामना करनी चाहिए कि वे अच्छे समाधान ढूंढें, और वे अक्सर ऐसा करते भी हैं, उदाहरण के लिए जैसे कोरोनावायरस को रोकने के लिए एक अच्छा सुरक्षित टीका।

लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि हम सभी महत्वपूर्ण कार्य और समाधान पेशेवरों पर छोड़ दें जबकि हम साधारण लोग बस बैठे रहें और कुछ न करें। वास्तव में, हम इतने साधारण भी नहीं हैं, और यदि हमारे पास मदद करने की अधिक नहीं तो सामान क्षमता तो है - ऐसा सिर्फ इसलिए है कि हमारे हृदय दयालु और खुले हुए हैं और क्योंकि हमारे पास विश्व में भलाई, शांति और सद्भाव लाने की गहरी आकांक्षा है।

हम सभी जानते हैं कि जब पेशेवर, नेता और व्यापारी लोग उनकी मूल प्रेरणा के रूप में उस हार्दिक इच्छा को नहीं रखते हैं तो वे अक्सर हित से अधिक अहित का सृजन करते हैं, चाहे वे तकनीकी रूप से कितने ही कुशल या शक्तिशाली क्यों न हों। यही वह जगह है जहाँ हम अतीत के अनगिनत महान गुरुओं की प्रज्ञा तथा उपाय - कौशलता द्वारा पथ-प्रदर्शन कराये जाने के लिए अत्यंत भाग्यशाली हैं जिन्होंने प्राणियों को वास्तविक लाभ प्रदान करने वाले असाधारण समाधान दिखाए और सिद्ध किए हैं।

हां, मानव ने एंटीबायोटिक्स की खोज की है और मनुष्य को चन्द्रमा पर उतारा है। लेकिन उन चमत्कारों के बावजूद, हमने यह भी सीखा है कि जब स्थिति गंभीर या अत्यावश्यक हो और जब खतरा हम पर चारों दिशाओं से आता है, उस समय हाथ धोने जैसे कुछ सरल मूल समाधान ही सामने आते हैं।

इसकी तुलना में भी सरल, अधिक बुनियादी और बहुत अधिक शक्तिशाली समाधान भी है - वह है जो गौतम शाक्यमुनि ने हमें २६०० साल पहले सिखाया था, और जिसे तब से अखण्डित वंशपरम्परा में हस्तांतरित किया गया है। वह है केवल अपने भीतर झाँकना आनापानसति (यह पाली भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है - अपने विचारों और भावनाओं के प्रति बिना धारणा बनाये सचेत रहना) होना, और स्मरण रखना कि हम स्वाभाविक रूप से दयावान, करुणामय और मन की एक पूरी तरह से जागृत अवस्था हैं।

यह बुद्ध शाक्यमुनि का महान उपहार और विरासत है। वास्तव में, हमारे यहाँ महान मार्ग दर्शक रहे हैं जैसे बहुत पीछे जाया जाय तो सम्राट अशोक जिन्होंने जाग्रिया (संस्कृत भाषा के इस शब्द का अर्थ है जागृत या सचेत) को प्राप्त किया, प्रेम और करुणा बुद्ध से सीखा-और राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा यहां तक कि तकनीकी भी अमल में लाये। ऐसा हो चुका है। हम भी कर सकते हैं।

इसलिए ऐसे महत्वपूर्ण समय में विश्व के लिए इसकी जबरदस्त क्षमता तथा इस उपहार की सराहना, पोषित और प्रचारित करने के लिए - हमारा एक दल शाक्यमुनि बुद्ध के नाम के पाठ को प्रारम्भ करने का प्रयास कर रहा है - वह जो पूरी तरह से ज्ञान, प्रेम, करुणा और पूर्ण खुलेपन का प्रतीक हैं। अब विश्व को इसकी आवश्यकता है।



तो आइए हम बुद्ध के नाम का जाप करें। उनके नाम को हम गाये। उनके नाम पर हम नाचें और उनके नाम की हम प्रशंसा, सम्मान और जयकार करें।



यह इसलिए है क्योंकि हम सामाजिक प्राणी हैं जो दूसरों के प्रभाव से प्रेरित होते हैं, कि हमें ऐसे आदर्श और उन गुणों के उदाहरण चाहिए जिनकी हम आकांक्षा करते हैं और जिससे विश्व की मदद हो सकती है। इसलिए, अतीत के महान संतों का स्मरण करना और आह्वान करना हमें उनके उदाहरण के प्रति झुकाव और अनुकरण करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

मनुष्य के रूप में हम लक्ष्य रखने के प्रवण (इच्छुक) हैं। इसलिए भले ही एक मंत्र या दस लाख मंत्र इनके बीच बिल्कुल कोई अंतर नहीं है, हम यहां २०२० के अंत तक शाक्यमुनि मंत्रों का दस करोड़ को पूरा करने का लक्ष्य बना रहे हैं जो २४ जुलाई से शुरू होंगे और जो एक शुभ धर्म चक्र दिवस भी है।

और यहां आप बुद्ध के नाम का पाठ किसी भी प्रकार से भी करें हम खारिज नहीं करेंगे। वास्तव में हम केवल इस तथ्य को महत्त्व देते और सराहना करते हैं कि आप ऐसा करने के लिए अपने समय और ऊर्जा का त्याग कर रहे हैं। और इसलिए, हर एक मंत्र जिसका आप जाप करें उसे हम संजोएंगे और सम्मानित करेंगे जिसे आप चलते समय, टीवी देखते समय, विंडो शॉपिंग करते समय, या एक पहाड़ पर अत्यंत शांत मंदिर में एक मेडिटेशन कुशन पर बैठ कर करेंगे।



यदि आपको यह उपयोगी लगे, तो आप साधना में दिए गए मानस-दर्शन (कल्पना) के अन्तर्गत जाप कर सकते हैं जिसे हम यहां प्रदान कर रहे हैं। लेकिन किसी भी अन्य परंपरा या वंशपरम्परा की किसी भी साधना का उपयोग करने के लिए आपका बहुत स्वागत है। आप किसी भी साधना या मानस-दर्शन के बिना भी जाप कर सकते हैं और बस दया, प्रेम, करुणा और बुद्ध की बोधि को याद रखें। जिस प्रकार से भी आपका कार्य हो जाय।

यदि आप कभी मंत्र गाना चाहते हैं तो हम यहां कई धुनें भी दे रहे हैं, जिनका आप उपयोग कर सकते हैं और आप अपने मंत्रों की धुन बनाकर उन्हें हमें भेजने के लिए भी हम आपका स्वागत करते हैं। हमारा इतना ही सुझाव है कि जब भी आप कर सकें, कृपया इस विचार को याद रखें कि हम पृथ्वी के लिए, मानवता के लिए, पशुओं, और सभी सचेतन-प्राणियों के लिए यह कार्य कर रहे हैं।



जैसे हम अपने वर्तमान के कष्टों को दूर करते हैं, प्रगति करते हैं, अधिक आरामदायक हो जाते हैं और अनेकों की तुलना में इस समय बेहतर अनुभव करते हैं, तो इस पर हम आत्मसंतुष्ट नहीं

होंगे। इसके स्थान पर, हमें वास्तविक संतोष की भावना रखनी होगी और साथ ही हम इस धरती पर सच्ची शांति तथा सद्भाव के लिए जाप करते रहेंगे, ताकि इसके निवासी न केवल अस्थायी रूप से आनंद अनुभव करें बल्कि एक ऐसी अवस्था में जागृत हों जो उनके लिए वास्तविक और स्थायी हितलाभ लाए।

— ज़ोंगसार जाम्यांग ख्येन्त्से